किसे चुन ?

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ३६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ३ नवम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

विनोबाकी यात्राको सफल बनाओ

[आचार्य कृपलानीने विनोबाकी अुत्तर प्रदेशकी भूदान-यात्राको सफल बनानेके बारेमें वहांके रचनात्मक कार्यकर्ताओं तथा जनताके नाम नीचेका वक्तव्य निकाला है :]

गांधीजीके रास्ते पर चलकर विनोबा बेजमीन किसानों और खेतिहरोंको फिरसे जमीन दिलानेके जो प्रयत्न कर रहे हैं, अुन्हें मैं बड़ी दिलचस्पीसे देखता रहा हूं। अैसे समय जब कि हमारी सरकारोंने राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक सुधारकी, विशेषकर आर्थिक सुधारकी, गांधीजी द्वारा बताओी हुअी सारी व्यावहारिक योजनाओंको छोड़ दिया है, यह देखकर हमें आश्वासन मिलता है कि भारतमें कमसे कम अेक व्यक्ति तो अैसा है, जिसकी श्रद्धा और निष्ठा आजादीके बादके वर्षोंमें चारों तरफ फैली हुअी अश्रद्धाके बीच भी अडिग और अचल बनी हुअी है। अपनी महान और समस्याके भीतर गहरी पैठनेवाली बुद्धिशक्ति, कल्पना और साधनाके तपस्यामय जीवनके कारण विनोबा ही अैसे व्यक्ति हैं, जो अिस कामके लिअे सबसे ज्यादा अुपयुक्त हैं। आजसे दस साल पहले भारतमें अंग्रेजोंके युद्ध-प्रयत्नके खिलाफ व्यक्तिगत सत्याग्रहका आरंभ करनेके लिअे गांधीजीने सबसे प्रथम सत्याग्रहीके रूपमें विनोबाको चुना था, वह कोओी संयोगकी बात नहीं थी। अुस समय विनोबा बहुत कम प्रकाशमें आये थे। लेकिन बापूने अपनी अचूक अन्तर्दृष्टिसे विनोबाको सत्याग्रहका आरंभ करनेके लिअे चुना। गांधीजी जानते थे कि व्यक्तिगत सत्याग्रह अुनके पहले जन-आन्दोलनोंकी तरह नहीं है। व्यक्तिगत सत्याग्रह व्यक्ति पर जोर देता है, जो अपने साथी-यात्रियोंका आध्यात्मिक समर्थन खोनेके बाद भी हिम्मत न हारकर निडर बना रहता है। अुसी भावनासे विनोबा फिर अेक बार भारतकी जमीनकी समस्याके कुछ पहलू हल करनेके लिअे सर्वथा अेकाकी निकल पड़े हैं।

पहली नवम्बरको वे मथुरामें रचनात्मक कार्यकर्ताओंका अेक सम्मेलन बुला रहे हैं, जो अुनकी सारे अुत्तर प्रदेशकी पैदल यात्राकी तैयारीके रूपमें होगा। मैं सम्मेलन और अुनकी यात्राकी सफलता चाहता हूं। भगवान् करे अिससे गांधीजीके बताये हुअे मार्गकी अभी तक अप्रकट रही संभावनाओंमें शंका रखनेवालोंकी आंखें खुल जायं और हमारे नेताओंको अुनके अूंचे और नाजुक काममें जरूरी मार्गदर्शन प्राप्त हो। अैसे मार्गदर्शनके बिना संभव है हमारा देश, जिसमें सामाजिक सुधार करनेकी बड़ी भारी आवश्यकता है, गरम या नरम पंथवालोंकी निर्दय और हिंसक विचारधाराका शिकार हो जाय। आज सच्ची लड़ाओी सुधारके नैतिक और भौतिक तरीकोंके बीच है। अगर श्रद्धा और प्रयत्नके अभावमें नैतिक तरीकोंको कोओी मौका नहीं मिलता, तो हिंसा, घृणा और असत्यके तरीकोंकी अवश्य जीत होगी। क्योंकि यह मांग जोर पकड़ती जा रही है कि मनुष्यकी अत्यन्त जरूरी आवश्यकताओंकी पूर्ति किसी भी तरह होनी ही चाहिये। मैं अुत्तर प्रदेशके सारे रचनात्मक कार्यकर्ताओंसे यह देखनेका अनुरोध करता हूं कि विनोबाजीकी यात्राको सफल बनानेके लिअे कोओी कोशिश अुठा न रखी जाय। मैं जनतासे भी प्रार्थना करता हूं कि वह विनोबाकी पुकार सुने और अुनके रास्तेको सरल बनाये।

(अंग्रेजीसे)

चिरगांवमें विनोबाका स्वागत

ता० १६-१०-'५१ को चिरगांव (झांसी) की सभामें पू० विनोबाजीका स्वागत करते हुअे कविवर श्री मैथिलीशरण गुप्तने कहा :

हम लोगोंने अिसी जगह चिरगांवमें परम पूज्य महात्मा गांधीका स्वागत किया था। आज हमें संतप्रवर पूज्य विनोबाजीका पवित्र स्वागत करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। चिरगांवके अितिहासमें यह दिन चिरस्मरणीय रहेगा। हमारे लिअे यह दिन अुतने ही महत्त्वका है, जितने महत्त्वका वह था जब पज्य बापू यहां पधारे थे।

हमारा देश राजाओंको नहीं पूजता। लेकिन हमारी बहनें भी संतोंको जानती हैं। विनोबाजी ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि संतोंकी परम्पराके हैं।

"वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।"

अैसी आपकी सहज वृत्ति है। हम चिरगांववासियोंका अहोभाग्य है कि आज हमें विनोबाजीकी अमृतवाणी सुननेका अवसर मिला। ये अुत्तर भारतकी पैदल यात्रा कर रहे हैं। निमित्त है भूमिहीनोंके लिअे भूमि लेना। अुद्देश महान है। अिस महान अवसरको देखते हुअे अिसके निमित्त जो कविता बनायी है, वह मैं आपको सुनाता हूं :—

भूमियज्ञ

लक्ष्मी सदैव चलती फिरती चपला-सी चमक दिखाती है,
यह धरती अचला होनेसे कब साथ किसीके जाती है?

मनुजात तुम्हीं जैसे हैं जो हतभाग्य तुम्हारे ही भाओी,
वे भूमि-भागसे वंचित हैं तो कहो, कौन अुत्तरदायी?
प्रभुने यह अवसर दिया तुम्हें, जो वस्तु अधिक तुमने पाओी,
देकर वह अुनके अर्थ अुन्हें तुम बनो समान सदय न्यायी।

ले लो, यह यशकी लूट स्वयं जो टूट सुफल-सी आती है,
यह धरती अचला होनेसे कब साथ किसीके जाती है?

शुभ कार्य सिद्ध करवानेको आचार्य सन्त हों सुलभ जहां,
तो अिससे बढ़कर भाग्य भला हो सकता है क्या और वहां।
यह तुम्हें खोजता हुआ स्वयं आया है अुलटा सुकृत यहां,
तुम चूक गये यह समय कहीं तो यही काल बन जाय न, हां!

रस-वंचित होकर प्रतिक्रिया विष ही विशेष बरसाती है,
यह धरती अचला होनेसे कब साथ किसीके जाती है?

— मैथिलीशरण

www.vinoba.in

विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा—३

[नर्मदाकी घाटीमें—१]

बरमान

जब विनोबाजी नर्मदाके किनारे स्थित बरमान गांवमें पहुंचे, तो वहांका सारा दृश्य देखकर हमें परंधाम आश्रमका स्मरण हो आया। नर्मदाके प्रति विनोबाका विशेष आदर है। नर्मदाका शाब्दिक अर्थ है सुखको देनेवाली। यहां अुत्तर और दक्षिणका संगम होता है। नर्मदाके किनारे ही शंकराचार्यने गुरुके चरणोंमें बैठकर दर्शन-शास्त्रका अध्ययन किया था। अिस गांवमें काफी दक्षिण भारतीय परिवार रहते हैं। अुनमें से अेक बूढ़ी और बहरी महिला विनोबाको देखने आअी और अुसने ५ अेकड़ जमीनका दान दिया। अुसके पतिने भी १०० अेकड़से अूपर जमीन दानमें दी।

नर्मदा देशके हृदयमें प्रवेश कर सकी है और लम्बी दूरी तक अुसके बीचसे अपना रास्ता तय करती है। तापी (जिसका अर्थ है तपे हुअे सूर्यकी पुत्री) नदीकी प्रगति रुक गअी है, क्योंकि आगे बढ़नेमें अुसने अिस बातकी परवाह नहीं की कि अुसके सामने जड़ चट्टान खड़ी है या सपाट जमीन है। न अुसने अनुकूल होना जाना और न किसीसे समझौता करना। न अुसने दूसरोंकी कमजोरियोंके प्रति सहानुभूति ही दिखाअी। नर्मदा रास्तेमें मिलनेवाले हरअेकके प्रति अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण रही है और अुसने जबरन किसी पर अपने आपको कभी नहीं लादा। अिसलिअे वह लम्बी दूरी तक यात्रा कर सकी है। विनोबाने कहा कि दोनों नदियोंका अैसा वर्णन अुन्हें बचपनमें अुनकी माताने सुनाया था, और अुसका अुन पर बड़ा असर पड़ा था।

तेतारपाणी

हमने नर्मदाको छोड़कर विन्ध्याचलमें प्रवेश किया। अिस महान पर्वतकी श्रेणीमें तेतारपाणी पहला मुकाम था। हम अेक डाकबंगलेमें ठहराये गये और सागरके अेक मित्रने वहां हमारा आतिथ्य किया। हमारे निवासस्थानके दोनों तरफ झोंपड़ियां खड़ी थीं, पीछेकी ओर अेक छोटा झरना कलकल नादके साथ बह रहा था और सामनेकी ओर अेक छोटी पहाड़ी अचल खड़ी थी। अिससे सारा दृश्य बड़ा आकर्षक मालूम होता था। अिसलिअे हमने सोचा कि सागर जिलेका पहला दिन हमारे लिअे पूरा आरामदेह साबित होगा। लेकिन ज्यों ही सूरज अूंचा चढ़ा, आसपासके गांवोंसे लोग आकर अिकट्ठे होने लगे और शाम तक तो प्रार्थनामें शरीक होनेके लिअे हजारसे अूपर लोग जमा हो गये। यह खबर पहले ही फैल चुकी थी कि 'विनोबा जमीनोंका दान लेते हैं और अुन्हें गरीबोंमें बांट देते हैं।' अिस छोटीसी जगहमें ९४ अेकड़ मिले। श्री पालिवालने, जो नर्मदाकी घाटीमें लगभग ३०० अेकड़का दान दे चुके थे, यहां ५१ अेकड़ जमीन और दी।

देवरी

दूसरा मुकाम देवरीमें करना था। हमेशाकी तरह हम लोग ४ बजे सुबह रवाना हुअे और यह देखकर हमें आश्चर्य हुआ कि लगभग ४-३० बजे—जब कि अंधेरा ही था—लोग रामधुन गाते हुअे विनोबाजीकी तरफ बढ़े चले आ रहे थे। वे लोग हमें महाराजपुर नामक गांवमें ले गये, जहां कअी स्त्री, पुरुष, बच्चे हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। अेकके बाद दूसरेने अपने भूदानकी घोषणा की और ५ मिनिटके भीतर २१ अेकड़का दान हो गया। विनोबाजीको अिससे ज्यादा खुशी और किस बातसे हो सकती थी? यह सारा दान लोगोंने स्वेच्छासे दिया था। विनोबाजीने लोगोंसे कहा: "कल्पना कीजिये कि ये बच्चे जवानीमें यह स्मरण करके कितने खुश होंगे कि हमारे माता-पिताने प्रातःकालके शुभ मुहूर्तमें बेजमीन गरीबोंके लिअे जमीनका दान दिया था। बेशक, वे अिससे भी बड़ा त्याग करनेके लिअे आगे आयेंगे। आप सबको देवरी आकर हमारी प्रार्थनामें शरीक होना चाहिये और यथाशक्ति भूदान देना चाहिये।" अुन्होंने तुलसीदासकी यह पंक्तियां गाअीं:

"तुलसीदास अति आनंद, निरखिके मुखारविन्द,
दीननको देत दान, भूषण बहुमोले।"

यहां कमल जैसे मुखवाले लोगोंने कीमती भूदान दिया था। विनोबाजीने ये पंक्तियां तब तक दोहराअीं, जब तक कि अुनका हृदय खुद कविको प्रेरणा देनेवाले भावोंसे भर नहीं गया।

देवरीमें किलेकी छत पर आम सभा हुअी। अिन्तजाम बड़ा अच्छा था। ५ हजारसे भी ज्यादा तादादमें लोग जमा हुअे थे। अेक गोंड़ जागीरदारने ९०३ अेकड़ दिये। देवरीका कुल दान तो १४१ अेकड़ तक ही पहुंचा। यह सब सभास्थान पर ही दिया गया था। गरीब लोग अेकके बाद अेक अुठे और अुन्होंने अपना-अपना दान घोषित किया।

अेक कांग्रेस-जनने, जो विनोबाजीके साथ व्यक्तिगत सत्याग्रहके दिनोंमें नागपुर जेलमें था, पहले अुनसे कअी प्रश्न पूछे थे। अुनमें से अेक था: "किसी मनुष्यको कब और कैसे पारिवारिक जीवनसे निवृत्त होकर अपना समय सेवामें लगाना चाहिये?" कार्यकर्ताओंकी सभामें प्रश्नोंका अुत्तर देते हुअे विनोबाजीने यह समस्या दूसरे ढंगसे रखी: "अगर आप लाखों पढ़े-लिखे, तालीम पाये हुअे, अनुभवी, स्वावलम्बी और निस्स्वार्थ सामाजिक कार्यकर्ता चाहते हैं, तो आपको आश्रमधर्म पर आधारित जीवन-पद्धतिको पुनः सजीव बनाना होगा।" अुन्होंने वर्तमान जीवन-पद्धतिकी टीका की, जो स्वावलम्बन और आत्म-नियमन पर नहीं, बल्कि भोग-विलास और मौज-शौक पर आधार रखती है। अुन्होंने बताया कि किस तरह पुराने लोग घर-गृहस्थीकी जिम्मेदारियां अपने बच्चोंको सौंपकर तप यानी सामाजिक हितके प्रयोग करते थे। आज तो धर्मात्मा ब्राह्मणोंने भी अिस पद्धतिको भुला दिया है। लड़के, पिता और पितामहको अेक साथ कानूनी अदालतोंमें प्रेक्टिस करते हुअे देखकर कैसा हास्यास्पद मालूम होता है! मानो अुनके पास दूसरा कोअी काम ही करनेको नहीं है और केवल मृत्यु ही अुन्हें अुनके पेशेसे छुटकारा दिला सकती है। जब तक लोग लोभ और लालचसे मुक्त नहीं होंगे, तब तक हमें अैसे लाखों कार्यकर्ता नहीं मिल सकेंगे। अिस सिलसिलेमें विनोबाजीने बताया कि मनुने किस तरह अपने पुत्रको शासनकी जिम्मेदारी सौंपी और अपनी मर्जीके खिलाफ सांसारिक जीवनसे निवृत्ति ली, क्योंकि वह जानता था कि स्वस्थ और लाभप्रद परंपराको बनाये रखनेका वही अेकमात्र रास्ता था। विनोबाजी चाहते हैं कि पारिवारिक जीवनको छोड़कर वानप्रस्थ लेनेके पक्षमें जनमत तैयार करना चाहिये। यही निस्स्वार्थ सेवकोंको प्राप्त करनेकी कुंजी है।

दूसरा अेक प्रश्न था: "क्या रामराज्य कभी आयेगा?" अिसके जवाबमें विनोबाजीने कहा: "यह प्रश्न वैसा ही है जैसा यह कि दो बजानेके बाद घड़ी तीन बजायेगी या नहीं? कोअी पंचांग रामराज्यके आगमनकी भविष्यवाणी नहीं कर सकता। लोग ही अुसे ला सकते हैं। वे अपनी रुचिके अनुसार रामराज्य, ब्राह्मणराज्य या सुग्रीवराज्य किसीकी भी स्थापना कर सकते हैं। अगर वे सच्चे हृदयसे रामराज्यकी कामना करते हैं, तो वे अपने आपको हनुमानकी तरह योग्य कार्यकर्ता साबित करें। रामराज्यकी स्थापना केवल मत देनेसे नहीं होगी। अुसके लिअे हमें परस्पर प्रेमका विकास करना होगा और दूसरोंके लिअे काम करनेकी अिच्छा अपनेमें पैदा करनी होगी। देवरीकी जनसंख्या ८,००० है। अगर यहांके लोग मेरे कहे मुताबिक चलें, तो यहांसे २,०९० सामाजिक कार्यकर्ता हमें मिल सकते हैं।"

गोर्झामर

गोर्झामरके छोटेसे गांवमें, जहां हमारा अगला मुकाम था, विनोबाजीको ४६ अेकड़ भूमि मिली। आसमानमें बादल छाये हुअे थे। विनोबाजीने बादलोंकी ओर अिशारा करके पूछा: "ये हमसे क्या कहते हैं? अुपनिषद्के ऋषियोंकी तरह बादल हमसे

www.vinoba.in

कहना चाहते हैं: 'दम'—अिन्द्रियोंको वशमें करो; 'दया'—पीड़ितोंकी सेवा करो; 'दान'—सर्वस्वका दान करो। अपने आपको जमीनका मालिक समझना कितना बेतुका है; जमीन तो जहांकी तहां रह जाती है और अुसका नामधारी मालिक मरनेके बाद मिट्टीमें बदल जाता है।"

सुरखी

फिर आया सुरखी गांव, जहां विनोबाजीको आम सभामें भाषण करनेके बाद केवल ४ अेकड़ मिले। सभाके बाद अुन्होंने अुपनिषद्का चिन्तन शुरू किया ही था—अिन दिनों वे रोज अुपनिषद्का चिन्तन करते हैं— कि अेक ग्रामवासी ६ मीलकी दूरीसे आया। अुसने सुना था कि विनोबाजी जमीनका दान लेते हैं और गरीबोंमें बांट देते हैं। अुसके पास कुल ६ अेकड़ जमीन थी। अुसमें से अुसने अेक अेकड़ दानमें दी। वह दान देकर गया ही था कि दूसरे भाअी बड़ी दूरसे आये और ५१ अेकड़का दान दे गये। यह प्रेरणा अुन्हें किसने दी? अुन्होंने न तो विनोबाका भाषण सुना था, और न वे अुनकी प्रार्थनामें ही शरीक हुअे थे। तब अुनको विनोबाके पास कौन लाया? यह निश्चित है कि अिसके पीछे केवल शब्द या प्रत्यक्ष जगत् ही काम नहीं करता। अिस जगत्में अिससे भी अधिक कोअी शक्ति है, जो कारगर तरीकेसे काम करती है लेकिन हमारी आंखोंको हमेशा दिखाअी नहीं देती।

सागर

अगला मुकाम सागरमें था। वहां सर्वोदय सम्मेलनका आयोजन किया गया था। सारे मध्यप्रदेशसे कअी कार्यकर्ता वहां अिकट्ठे हुअे थे। महाकोशल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष सेठ गोविन्ददास विनोबाजीसे मिलकर गद्गद हो गये। अुन्होंने कहा: "आपने बहुत बड़ा मिशन हाथमें लिया है। यह निश्चित ही क्रान्ति पैदा कर देगा। यह सचमुच अनोखा मिशन है। जहां भी मैं जाअूंगा अिसका जिक्र करूंगा।" फिर आये ठाकुर निरंजनसिंह, जो सेठ गोविन्ददासके राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वी हैं। अुन्होंने भी पूरी सहायताका वचन दिया। अुनके कार्यकर्ता भूदान अेकत्रित करनेमें लग चुके हैं, जिसका अच्छा नतीजा आया है।

कार्यकर्ताओंकी सभामें विनोबाजीने प्रश्न पूछनेको कहा और बताया कि अुन्हें शंकायें पैदा करनेके विचारसे भागना नहीं चाहिये, क्योंकि कभी-कभी शंकायें प्रश्नका बड़े महत्त्वका पहलू सामने लाती हैं। फिर अुन्होंने पूछा: "यह सच है कि मैं बेजमीनोंमें जमीन बांटनेका दावा करता हूं। लेकिन मेरे पास अेक कौड़ी भी अपनी कहनेको नहीं है। तब अिस कामके लिअे मेरे पास क्या बल है?" अुन्होंने खुद अिसका जवाब देते हुअे कहा: "मेरा बल मेरा देश, अुसका वातावरण, अुसकी संस्कृति है। मैं दूसरे देशोंके बारेमें नहीं जानता। अिसलिअे मैं अुनके बारेमें कुछ नहीं कह सकता। लेकिन मैं जानता हूं कि भारतमें फैले हुअे काला-बाजार और रिश्वतखोरीके बावजूद लोगोंमें काफी सद्भावना है। मैं नहीं मानता कि जो सद्भावना प्रत्यक्ष दिखाअी देती है, वह बाहरी और झूठी है। मैं जानता हूं कि भक्ति और शैतानियत साथ-साथ रही हैं। जीवनमें अैसे क्षण आते हैं, जब भक्तिकी जीत होती है और भीतरका प्रवाह सेवा और त्यागके जरिये बाहर प्रकट होता है। जब अैसे अवसर ज्यादा आते हैं, तब अेक दिन अैसा आता है जब शैतानियतका जड़मूलसे नाश हो जाता है। चूंकि हजारों आदमी काला-बाजार और रिश्वतखोरीमें फंसे हैं, अिसलिअे मैं यह माननेके लिअे तैयार नहीं हूं कि सारे आदमी भ्रष्ट हो गये हैं। हमारे यहांकी आर्थिक व्यवस्था ही अैसी है, जो अुन्हें न चाहते हुअे भी अैसी बुराअियोंकी तरफ जबरन ले जाती है। अिसलिअे सारे दोषकी जड़ आर्थिक व्यवस्था है, जिसे सुधारना चाहिये। मुझे अिसमें जरा भी शंका नहीं है कि सारे राष्ट्रका हृदय नहीं बिगड़ा है। अिसीलिअे अपने तरीकेकी सफलतामें मेरी बड़ी श्रद्धा है। यह तरीका मांगनेका है, मारनेका नहीं। मारनेका तरीका रूस और दूसरे देशोंमें आजमाया गया है और वह असफल रहा है। अगर वह तरीका यहां भी आजमाया गया, तो हमारा सर्वनाश हो जायगा। लेकिन अीश्वर कुछ और ही चाहता है, वर्ना वह मुझे अपने कामका निमित्त क्यों बनाता?"

विनोबाजीने दो दिन सागरमें खूब काममें बिताये। वे कार्यकर्ताओंसे व्यक्तिगत और सामूहिक रूपमें मिले, अुनकी कठिनाअियां समझनेकी कोशिश की और अुनका आवश्यक पथ-प्रदर्शन किया। भूदान-यज्ञके लिअे जिलेवार व्यवस्थापक नियुक्त किये गये। अुत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश और विन्ध्यप्रदेशसे कार्यकर्ता आये थे। श्री बैजनाथ महोदयने कार्यकर्ताओंकी सभामें कहा कि मैं भूदान-यज्ञके क्रान्तिकारी तत्त्वको अेकदम समझ गया हूं। मैं स्वीकार करता हूं कि अगर मैं सम्मेलनमें न आया होता, तो अिस मिशनके सब पहलुओंको नहीं जान पाता। श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालने बताया कि चीनमें किस तरह कम्युनिस्ट लोगोंको छोटी-छोटी जमीनें बांट रहे हैं और किस तरह दूसरे देश अपनी सूझ-बूझसे विनोबाके विचारों पर अमल कर रहे हैं। अुन्होंने कहा कि हमें चर्चाओंमें समय नहीं गंवाना चाहिये, बल्कि तुरंत विनोबाजीके विचारों पर अमल करना चाहिये।

अुस दिन सारे प्रान्तसे जमीनोंका दान मिला। मध्यप्रदेशके भूतपूर्व मंत्री और योजना-कमीशनके सदस्य श्री आर० के० पाटिलने विनोबाजीको अेक भावभीना पत्र लिखकर चांदा जिलेकी अपनी २५५ अेकड़ जमीन दानमें दी। श्री गोविन्ददास और श्री व्योहार राजेन्द्रसिंहने भी व्यक्तिशः १०१ अेकड़ जमीन देनेका वचन दिया। अेक समाजवादी नेता श्री अब्दुलगनीने अपनी कुल ३२ अेकड़ जमीन और अुसके साथ अेक मकान भी दानमें दे डाला। राज्यके दूसरे शहरोंकी तरह अिस शहरका दान भी सिर्फ १२८ अेकड़ ही रहा। अूपर बताये हुअे दूसरे दानोंका आंकड़ा ५१६ अेकड़ तक पहुंचा। अेकत्रित कार्यकर्ताओंने यह गंभीर प्रतिज्ञा की कि मध्यप्रदेशसे वे कमसे कम १ लाख अेकड़ भूमि जरूर अिकट्ठी करेंगे।

विनोबाजीको संस्थाअें देखनेका मौका मुश्किलसे ही मिलता है। लेकिन सागरमें अेकके बजाय दो दिन रहनेके कारण अुन्होंने दो संस्थाओंमें जाना कबूल किया। अेकमें अुन्होंने गुरुदेव सेवा-मंडल द्वारा आयोजित साप्ताहिक प्रार्थनाका अुद्घाटन किया। वे दिगंबर संस्कृत विद्यालयमें भी गये। अुनके सम्मानका जवाब देते हुअे विनोबाजीने कहा कि जैन समाजने अहिंसाकी अपनी देनसे दूध यानी समाजमें शकर मिलानेका काम किया है। जैन विद्वानोंने अहिंसाके विकासके लिअे जो साहित्य लिखा, अुसकी अुन्होंने प्रशंसा की और यह सुझाव दिया: "मैं यह नहीं कहता कि आप लोग सत्यकी अुपेक्षा करते हैं। लेकिन व्यापारी समाज होनेके कारण आप यह मानने लगे हैं कि सत्यका महत्त्व अहिंसाके जितना नहीं है। लेकिन यह गलत है। सत्य और अहिंसा अविभाज्य हैं और वे अेक-दूसरेसे अलग नहीं किये जा सकते। महात्माजीका जीवन केवल सत्य पर आधारित अहिंसाका प्रयोग था।"

जिन्होंने गांधी-जयंतीके दिन विनोबाजीका भाषण सुना, वे अुनके भावों और आत्मनिरीक्षणसे खूब प्रभावित हुअे। यद्यपि वह भाषण मुख्यतः अुन्होंने अपने आपको ही सुनाया था, फिर भी अुसमें बहुत कुछ अैसी बातें थीं, जो हमें आत्मशुद्धि करनेमें सहायक हो सकती हैं। लेकिन हमें अपनेसे यह पूछना था कि क्या हम भी अुनके साथ यह कह सकते हैं कि "राष्ट्रीय आन्दोलन आये और गये। चुनाव भी आये और गये। लेकिन मित्रों और लोगोंने देखा कि यह अेक आदमी है, जो नित-निरन्तर अपने समाज-सेवाके काममें मशगूल रहता है।" और अुन्होंने आगे कहा: "अुन सबने मुझ पर प्रेम और केवल प्रेम ही बरसाया।"

(अंग्रेजीसे)

वा० मू०

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

३ नवम्बर १९५१

किसे चुनें?

हममें से कुछ लोग अभीसे चुनावके जोशमें आ गये हैं। हमारे चुनाव-क्षेत्रमें तो प्रचार और आन्दोलनकी काफी सरगर्मी शुरू हो गअी दिखती है। सुना गया है अेक 'गण्यमान्य' जातिका यह कहना है कि "हमारी जाति अिस अिलाकेकी अेक मुख्य जाति है। यह अुचित ही है कि हम लोगोंका अेक व्यक्ति धारासभाके लिअे नामजद किया जाय।" सुनकर मनमें सवाल अुठता है, क्या यही हमारा स्वतंत्र भारत है? क्या हमारा संघर्ष और आजादी-आन्दोलन अिसी चीजके लिअे था? क्या हमारा राज्य किसी खास जाति या सम्प्रदायका राज्य होनेवाला है? यह मनोवृत्ति सच्ची लोकशाहीकी सच्ची बुनियाद कभी नहीं हो सकती। मतदाताओंका कोअी वर्ग या समुदाय यदि अिस तरह सोचता है या अैसी भाषा बोलता है, तो बाकी जनताका कर्तव्य है कि वह अुसकी कड़ी आलोचना करे और धारासभाकी अुम्मीदवारीके लिअे अुसकी अुपेक्षा करे। जाति या सम्प्रदायके ही आधार पर चलना हो, तब तो अुम्मीदवार सबसे कमजोर जातिसे खड़ा करना चाहिये, ताकि कमजोर और शोषित लोगोंको न्याय मिले। लेकिन वह भी हमारे कामका ठीक आधार नहीं हो सकता। मैं यहां पाठकोंके विचारार्थ कुछ प्रश्न सुझाता हूं। जो अुम्मीदवार किसी चुनाव-क्षेत्रका प्रतिनिधित्व करना चाहता है, अुससे हमें ये प्रश्न पूछने चाहियें। या ज्यादा अच्छा यह होगा कि हम खुद अिन प्रश्नोंको अुठायें और अिनके आधार पर अुम्मीदवारका चुनाव करें, तथा अपनी पसंदके प्रतिनिधिको अपना मत दें।

गांधीजीकी बहुमुखी प्रतिभाका अेक विशेष पहलू यह है कि जिस तरह अुन्होंने राजनीतिक आजादी हासिल करनेका मार्ग बताया, अुसी तरह राष्ट्रके पुनर्निर्माणका अैसा कार्यक्रम भी पेश किया, जिससे सबको पूरी आजादी और न्याय हासिल हो सके। अिस कार्यक्रमका लक्ष्य 'जाति और वर्ग-विहीन समाज' की रचना करना था और है। हमें मालूम करना चाहिये कि अुम्मीदवार समाजकी अैसी रचनामें विश्वास करता है या नहीं। वह अपने वैयक्तिक जीवनमें जाति-पांतिकी संकुचित मनोवृत्तिसे अूपर अुठकर चलता है या नहीं? हमें अुससे साफ-साफ पूछना चाहिये और जवाब मांगना चाहिये कि "तुम अिस जाति और वर्ग-विहीन समाजकी स्थापनाके लिअे क्या करनेवाले हो?" अिसके सिवा, हमें अुम्मीदवारके जीवन-व्यवहार पर गौर करना चाहिये और देखना चाहिये कि अुसका आचरण जाति या संप्रदायकी तंगदिलीसे मुक्त है या नहीं। यह अुसकी राजनीतिक अीमानदारीका प्रमाण होगा।

गांधीजीने हमसे कहा कि हमें साम्प्रदायिक अैक्यकी यानी सच्चा मनुष्य-समाज बनानेकी कोशिश करनी चाहिये। अैसे समाजमें अुम्मीदवारका विश्वास है या नहीं? वह जातिवादी या साम्प्रदायिक संस्थाओंकी मदद तो नहीं करता? साम्प्रदायिक अेकताकी वृद्धिके लिअे वह क्या करेगा? हम अुसे अपना मत दें, अिसके पूर्व अुसे अिन प्रश्नोंका स्पष्ट अुत्तर देना चाहिये।

गांधीजी बड़े-बड़े सामाजिक सुधार करना चाहते थे। वे शराब और जुआखोरी मिटाना चाहते थे। अुम्मीदवार अैसी समाज-शुद्धिमें मानता है या नहीं? क्या वह शराबबंदीका समर्थन करेगा? वह हरअेक अुचित सामाजिक सुधारकी ताअीद करेगा या नहीं? अुदाहरणके लिअे, क्या वह यह आग्रह रखेगा कि स्त्रियोंको पुरुषोंके साथ समान अधिकार होना चाहिये? किस तरह?

फिर, अुम्मीदवार आर्थिक समताका आदर्श मानता है या नहीं? वह अुसके लिअे क्या करेगा? क्या वह भूमि पर अधिकारकी मौजूदा पद्धतिमें क्रांतिकारी परिवर्तन करनेके लिअे तैयार होगा? क्या वह अिस बातके लिअे तैयार है कि जो प्रत्यक्ष खेती-काम नहीं करते, अुन्हें जमीन रखनेका अधिकार न रहे? क्या वह अिस बातकी पूरी कोशिश करेगा कि बेजमीन खेतिहरोंको जमीन दी जाय? क्या वह यह आग्रह रखेगा कि अगर सरकार धनिक और मध्यम वर्गके लोगोंके लिअे मकान बनवा रही है, तो अिससे पहले अुसका कर्तव्य है कि वह गरीब ग्रामवासियों और खासकर हरिजनोंको बेहतर मकान और गांव बनानेमें मदद करे? वह ग्रामोद्योगोंकी अुपयोगितामें विश्वास रखता है या नहीं? क्या वह अैसे अुद्योगोंकी अुन्नतिके लिअे अपना पूरा प्रयत्न करेगा, जिससे कि किसानोंको खेतीके काममें सफलता न मिलनेकी हालतमें अेक पूरक धंधा मिल सके? क्या वह अिस बात पर जोर देगा कि अनाजको खाद्यान्नका रूप देनेका काम गावोंमें ही किया जाय, और अिस तरह किया जाय कि अुनके पोषक तत्त्वोंकी रक्षा हो? क्या वह अपना जोर अिस बातके पक्षमें लगायेगा कि चावलकी सफाअीका काम चावलकी मिलोंमें न किया जाय और तेलकी मिलोंमें तेलके पोषक तत्त्वोंका नाश न किया जाय? क्या वह अिन ग्रामोद्योगोंकी, जो चावल और वनस्पतिजन्य तेलोंके पोषक तत्त्वोंकी रक्षा करते हैं, हर तरहसे पूरी मदद करेगा? क्या वह अपनी सारी शक्ति अिस बातमें लगानेके लिअे तैयार होगा कि कपड़ा-अुद्योग गांवोंमें बढ़ाया जाय और कोयम्बतूर, मद्रास और मथुराअी जैसे बहुत ज्यादा सधन केन्द्रोंमें कम किया जाय?

अिस प्रान्तमें (मद्रासमें) अेक ग्रामविकासकी योजना बनायी गयी है। अुस योजना पर अमल हो रहा है और अच्छा काम चल रहा है। अुससे देहातोंमें काम करनेवालोंको कुछ प्रोत्साहन मिला है। अुम्मीदवार अिस कार्यक्रमको आगे बढ़ाने और मजबूत बनानेकी कोशिश करेगा या नहीं? क्या वह अिस बातका खयाल रखेगा कि सरकारकी करोंसे होनेवाली आयका ज्यादा हिस्सा गांवोंमें खर्च हो जिन्हें अुसकी आवश्यकता है, और शहरोंमें कम खर्च हो जिन्हें आज तक अिस आमदनीका अपने अधिकारसे ज्यादा हिस्सा मिलता रहा है?

अुम्मीदवार स्वच्छ और नीरोग गांव चाहता है या नहीं? गांवोंमें स्वच्छता और आरोग्यकी वृद्धिके लिअे अुसने क्या किया है और आगे क्या करेगा? क्या वह स्वास्थ्य और स्वच्छताकी वृद्धिके ठोस कार्यक्रमको आगे बढ़ानेके लिअे तैयार है? और क्या वह अिस कार्यक्रममें सरकारकी ओरसे पूरी मदद दिलायेगा?

अुम्मीदवार सार्वत्रिक और जीवन-केन्द्रित शिक्षण-योजनाका लक्ष्य स्वीकार करता है या नहीं? अपने राज्यमें वह बुनियादी शिक्षाकी सर्वसम्मत योजना प्रचलित करवानेके लिअे पूरे मनसे तैयार है या नहीं? सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षाके प्रचारके लिअे वह क्या करेगा? क्या वह गावोंमें शिक्षाप्रचार पर शिक्षा-विभागकी रकमका ज्यादा हिस्सा और शहरोंमें शिक्षाकी व्यवस्था पर, जरूरत पड़ने पर, काफी कम हिस्सा देनेको तैयार है? क्या वह नागरिकताकी तालीमकी कोअी अैसी संपूर्ण योजना चलानेके लिअे तैयार है, जो प्रत्येक ग्रामवासीको सर्जनशील नागरिक बनना बताये? क्या वह जन-विद्यालयों (Peoples' Colleges) की स्थापना करेगा?

क्या अुम्मीदवार अपनी भाषा और संस्कृतिमें विश्वास रखता है? क्या वह अुस संस्कृतिका अच्छा प्रतिनिधि है? अपनी मातृभाषा पर अुसका पर्याप्त अधिकार है या नहीं? वह अपनी महान् सार्वदेशिक संस्कृतिको मानता है या नहीं? क्या वह भारतकी सर्व-स्वीकृत राष्ट्रभाषाके प्रचारमें योग देगा? अुसे राष्ट्रभाषाका ज्ञान है या नहीं? वह अिस राष्ट्रभाषाके निर्माणके लिअे क्या करेगा?

www.vinoba.in

क्या अुम्मीदवार सब लोगोंके लिअे जीवन-निर्वाहके लायक वेतनके सिद्धान्तको मानता है? कारखानोंके सब मजदूरोंको यह वेतन मिले, अिसके लिअे वह क्या करेगा? खेती तथा अन्य अुद्योगोंके मजदूरोंको अितना वेतन दिलानेके लिअे वह क्या करेगा? धनिक और मध्यम वर्गके लोगोंकी आयमें तब तक कमी होना चाहिये, जब तक कि देशके हरअेक नागरिकको जीवन-निर्वाहके योग्य वेतन नहीं मिलने लगता — अिस अुद्देश्यसे जो आन्दोलन किया जायगा, अुसमें क्या वह सहायता करेगा? क्या वह अिस बातकी कोशिश करेगा कि चोटीके सरकारी कर्मचारियोंको वेतन कम दिया जाय, और जिनको कम मिल रहा है अुन्हें ज्यादा दिया जाय?

अगले दो माहोंमें जब अुम्मीदवार हमारे पास 'वोट' मांगनेके लिअे आयें, तो अुनसे हमें अिस तरहके प्रश्न अवश्य करने चाहियें और अिनका स्पष्ट जवाब मांगना चाहिये। अच्छा हो कि हरअेक गांव अेक बड़ी आम सभाकी योजना करे और अुसमें सब अुम्मीदवारोंको बुलाये। फिर अुनके सामने यह प्रश्नावली पेश कर दी जाय या अैसा कोअी निश्चित कार्यक्रम ही सामने रख दिया जाय, जिसमें गांवके लोगोंको विश्वास हो, और फिर अुस अुम्मीदवारसे निश्चित अुत्तर देनेके लिअे कहा जाय। दूसरे शब्दोंमें, हम राष्ट्रीय निर्माणके कार्यक्रमकी अपेक्षा अुम्मीदवारसे न करें, बल्कि हम खुद अुसे यह कार्यक्रम दें; और अपना मत अुम्मीदवारको तभी दें, जब वह यह विश्वास दिलाये कि वह अुक्त कार्यक्रमका समर्थन पूरे मनसे करेगा। मुझे लगता है कि चुनावोंके प्रति हमारा यह दृष्टिकोण सर्वोदय-तत्त्वके अनुकूल होगा। अच्छा हो कि हम अपने चुनावोंको शुरूसे ही काफी अूंची भूमिका पर ले जायं। मैं आशा करता हूं कि पाठक अिस लेखको पढ़नेके बाद चुनावोंके संबंधमें और भी अच्छी सलाह दे सकेंगे। महत्त्वकी बात यह है कि हम अिस कामको हाथमें लें और कुछ कर डालें।

गांधीग्राम, १२-१०-'५१ — राल्फ रिचार्ड कैथान
(अंग्रेजीसे)

साम्यवाद और सर्वोदय

३, अिलेक्ट्रिक लेन,
नअी दिल्ली
२६ अगस्त, १९५१

श्री सम्पादक, हरिजन,

१८ अगस्तके 'हरिजन' में श्री डांगेका पत्र, अुस पत्रका विनोबाजी द्वारा दिया गया अुत्तर और आपका 'साम्यवादके बारेमें' शीर्षक लेख मैंने बड़ी दिलचस्पीसे पढ़ा।

मैं आपके अिस कथनसे बिलकुल सहमत हूं कि पश्चिमका पूंजीवादी जनतंत्र साम्यवादकी चुनौतीका सफल मुकाबला नहीं कर सकता। मनुष्यकी बुनियादी अेकताकी भूमिका पर अवस्थित सर्वोदयकी सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक ताकत ही पूंजीवाद और साम्यवाद दोनोंका संहार करनेवाली है। मैं आपसे अिस बातमें भी अेकराय हूं कि कुल मिलाकर भारतीय मानस दुनियामें सबसे ज्यादा अुदार है। अिसमें शक नहीं कि पश्चिमकी अनुदारता ही गुजरे हुअे जमानेमें अुसके पतनका कारण हुअी है, और आज भी अुसके आध्यात्मिक जीवनका नाश वही कर रही है। अगर पश्चिम अपनी अनुदार असहिष्णुताका त्याग नहीं करता, तो अुसके जीवनका स्रोत जल्दी ही सूख जानेवाला है, और वह मनुष्य-जीवनके पौधेको सींचनेमें तथा अुसका संवर्धन करनेमें असमर्थ हो जायगा।

लेकिन अितना माननेके बाद भी मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारी अिस अुदारताका कारण हमेशा यह नहीं रहा है कि हमने दूसरोंके विचारों और विश्वासोंका मूल्य प्रयत्नपूर्वक समझा है। हमारी यह अुदारता अकसर जीवन और अुसके सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्योंके प्रति रही हमारी अुपेक्षा, बल्कि जड़ताका परिणाम भी रही है; और शायद अिसका कारण यह है कि हम 'कर्म' के नियमको समझनेमें गलती करते रहे हैं।

दूसरे, हमें चाहिये कि हम अिस पुरानी गलतीको अब और न दुहरायें। बहुत दिन तक हमारे नेता पश्चिमको सिर्फ अंग्रेजोंकी निगाहसे देखते रहे हैं। मुझे डर है कि आजकल हम अुसकी समीक्षा सिर्फ अमरीकी मानदंडसे कर रहे हैं। हम स्वयं न तो साम्यवादके खिलाफ अमेरिकाकी मतान्ध नीति या जेहादको पसंद करते हैं, और न अुसका समर्थन ही करते हैं। लेकिन साथ ही हमें अमरीकी लोगोंके अिस मनोभावका ठीक कारण भी याद रखना चाहिये। अमरीकी नागरिक व्यक्तिकी संपूर्ण स्वतंत्रता पर विरचित अपनी लोकतंत्रगामी जीवन-प्रणालीको बहुत प्यार करता है, और — सही हो या गलत — अैसा मानता है कि साम्यवाद अुक्त जीवन-प्रणालीका नाश करनेवाला है। तो हम अुसके प्रति भी सहिष्णु और अुदार रहें।

लेकिन क्या कोअी हमारी अपनी भी जीवन-प्रणाली है? और क्या हम अुससे अुतना ही प्यार करते हैं, जितना कि अंग्रेज या अमरीकी अपनी प्रणालीसे करते हैं? गांधीजी अकसर अपनेको साम्यवादी कहते थे, लेकिन वे अहिंसक साम्यवादी थे; यानी वे यह मानते थे कि जिसमें नीति और न्यायकी प्रतिष्ठा हो, अैसा मानव-समाज सिर्फ अहिंसाके द्वारा ही बनाया जा सकता है। "अगर साम्यवादी गुप्त, हिंसक या प्रतारक अुपायोंका अवलंबन न करें" — लेकिन अितनेमें ही तो आकाश-पातालका अन्तर हो जाता है। अिसका कारण, जैसा गांधीजी कहा करते थे, यह है कि "अुनके जीवन-दर्शनमें साधन और साध्य अभिन्न चीजें हैं। साधन बीजके समान है और साध्य वृक्षके समान। साधन और साध्यमें वही अटूट संबंध है, जो बीज और वृक्षमें है।"

अिसलिअे आदर्शके प्रति अपनी प्रीति और भक्तिके वेगमें हम कहीं अनजाने और अनदेखे साम्यवादियोंके साधनोंकी बुराअीको कम न कर डालें, यह सावधानी हमें रखनी है। स्पष्ट है कि साम्यवाद और सर्वोदय दोनों अेक दूसरेसे अुतने ही अलग हैं, जितने कि अुत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव।

भवदीय

शंकरराव देव

[नोट: सवालके अिस पहलूके विषयमें मेरी या विनोबाकी दृष्टि कहीं अस्पष्ट है, अैसी शंका मुझे नहीं हुअी थी। तब भी श्री देवकी अिस चेतावनीका मैं स्वागत करता हूं। अिस प्रसंगमें अेक बात और समझ लेनी चाहिये। वह यह है कि हम लोगोंमें से अधिकांश जब साम्यवादका विचार करते हैं या अुसकी चर्चा करते हैं, तो अुनके मनमें रूसी साम्यवाद ही होता है। जैसा कि श्री म० प० त० आचार्यने अपने लेखमें* सही तौर पर निरूपित किया है, रूसी व्यवस्था राज्य-संचालित पूंजीवाद ही है, साम्यवाद बिलकुल नहीं। अिसी तरह भारतमें जिन लोगोंको साम्यवादी दलका नाम दिया जाता है, अुन्हें दरअसल राज्यनिष्ठ पूंजीवादी कहना चाहिये। अिस विचारमें भी साम्राज्यवादको अुतना ही अवकाश है, जितना किसी दूसरेमें। अमेरिका और रूसमें जो स्पर्धा चल रही है, वह सचमुच तो अलग-अलग प्रकारके दो प्रतियोगी पूंजीवादोंकी स्पर्धा है। अिनमें से अेक व्यक्तिनिष्ठ पूंजीवाद चाहता है और दूसरा राज्यनिष्ठ पूंजीवादका हिमायती है। पूंजीवाद युद्ध, शोषण और किसी न किसी तरहकी गुलामीके बिना चल नहीं सकता। अिसलिअे अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं कि दोनोंको हिंसाका आश्रय लेना पड़ता है। सर्वोदयके साथ अिनमें से किसीकी संगति नहीं बैठती।

वर्धा, ३०-८-'५१ — कि० घ० म०]
(अंग्रेजीसे)

* यह लेख 'हरिजनसेवक' (२०-१०-'५१) में 'साम्यवाद और राष्ट्रीय पूंजीवादमें भ्रांति' नामसे छप चुका है।

www.vinoba.in

असभ्यता

अेक मुसलमान गृहस्थ लिखते हैं:

"पिछले बीस बरससे मैं कांग्रेसमें काम करता हूं। और कांग्रेसकी छोटी जगहों, स्कूल बोर्डों वगैरामें भी चुना जाता हूं। कांग्रेस सम्प्रदायवादी संस्था नहीं है। और अिसमें शक नहीं कि अल्पसंख्यक जातिका रक्षण अिस पवित्र संस्थाके अलावा दूसरी जगह नहीं होता। मेरे बहुतसे हिन्दू मित्र हैं और अुनके परिवारोंके साथ मेरा घरोपा जैसा संबंध भी है। फिर भी कुछ जगहोंमें मेरे साथ अेक विचित्र व्यवहार किया जाता है, जिसका मुझे हमेशा दुःख रहता है।

"बहुतसे हिन्दू परिवारोंमें मुझे जीमने जानेका या चायका निमंत्रण स्वीकार करनेका मौका आता है। अुस समय मैं देखता हूं कि घरके अेक कोनेमें जीनेके नीचे या कचरेवाली जगहमें अेकाध गंदा कप, मैला गिलास और रंग न पहचाना जा सके अैसी रकाबी रखी होती है। यह साफ-जाहिर हो जाता है कि अुनका अुपयोग मेरे जैसे किसी मुसलमानके लिअे ही होता होगा। अुन बरतनोंको थोड़ा-बहुत साफ करके मुझे अुनमें परोसा जाता है। मुझे यह बड़ा अपमानकारक लगता है। बरसों मैंने अिस चीजको निभाया, लेकिन आज आपको लिखे बिना नहीं रहा जाता।

"घांची, गोला वगैरा कअी हिन्दू जातियां मांस-मदिराका भी सेवन करती हैं। हम लोग और खास कर मेरे जैसे वोरा लोग तो किसी तरहका नशा नहीं करते। फिर भी वे चूंकि हिन्दू कहलाते हैं, अिसलिअे अुन्हें हिन्दू परिवारोंमें अपने बरतनोंमें परोसा जाता है। और मैं मुसलमान माना जाता हूं, अिसलिअे मेरे साथ अैसा अपमानभरा बरताव किया जाता है। अिस विषयमें आप मेहरबानीसे अुचित सलाह दें।"

अिन भाअीकी शिकायत बिलकुल सच्ची है। कुछ लोगोंके यहां यह असभ्यताका व्यवहार अब बन्द हो गया है। फिर भी मैं जानता हूं कि बहुतसे हिन्दुओंके घरोंमें अैसा असभ्य बरताव होता है। यह काम शोभा बढ़ानेवाला तो हरगिज नहीं है। यह जल्दीसे जल्दी बन्द हो जाना चाहिये। जैसे यह मुसलमानोंके साथ बन्द होना चाहिये, वैसे ही पारसी, अीसाअी, हरिजन वगैराके साथ भी नहीं होना चाहिये।

मैंने अिन भाअीको सलाह दी है कि अैसा आमंत्रण मिलने पर यह जान लेना चाहिये कि आमंत्रण देनेवालेके यहां क्या रीत है। और यदि वहां अिस तरह अलग बरतनमें परोसनेकी रीत हो, तो खुद अपने बरतन लेकर वहां जाना चाहिये और अपने ही बरतनोंमें खाने-पीनेका आग्रह रखना चाहिये। अिसका कारण भी समझाना चाहिये।

अैसा आमंत्रण न माननेका रास्ता भी लिया जा सकता है। और वैसा करनेका अिन भाअीको हक भी है। लेकिन मेरा सुझाया हुआ रास्ता संभव है ज्यादा अहिंसक और असरकारक साबित हो। यह याद रखना चाहिये कि अिस व्यवहारमें आमंत्रण देनेवालेके हृदयकी दुष्टता नहीं होती, बल्कि जो परम्परा पड़ गअी है अुसमें से निकल न सकनेकी जड़ता होती है। कअी बार स्त्रियोंकी तरफसे भी कठिनाअी पैदा होती है। अिसलिअे अिस तरफ मुसलमान भाअियोंको थोड़ी अुदार दृष्टि रखकर लोगोंको समझाना चाहिये। अपमान सहन तो हरगिज नहीं करना चाहिये, परंतु साथ ही गुस्सा भी नहीं रखना चाहिये।

श्रीकृष्णको दुर्योधन और विदुर दोनोंने खानेका न्योता दिया था। दुर्योधनने राज्यकी रीतके अनुसार दिया और विदुरने प्रेमका न्योता दिया। श्रीकृष्णने दुर्योधनका न्योता नहीं माना। अुन्होंने कहा: मनुष्य दो कारणोंसे दूसरेके यहां खाता है। अेक, खानेको न मिले तब; दूसरा, न्योता देनेवालेके प्रेमके कारण। मुझे खानेको नहीं मिलता, अैसी बात नहीं। और विदुरके न्योतेमें प्रेम है, अिसलिअे आपका न्योता मैं स्वीकार नहीं कर सकता।

वर्धा, चरखा द्वादशी, २७-९-'५१
(गुजरातीसे)

कि० घ० मशरूवाला

बंबअीमें शराबबंदीका भविष्य

अेक पत्रलेखकने अेक मुद्दा अुठाया है, जो नीचे लिखी भाषामें प्रगट किया जा सकता है:

"मैं दर्जी जातिका व्यक्ति हूं। जटिल राष्ट्रीय सवाल मैं नहीं समझता। लेकिन बम्बअी सरकारकी शराबबंदीकी नीतिमें मेरी बड़ी दिलचस्पी है, क्योंकि मेरी जाति अिस व्यसनमें बेहद डूबी हुअी है, और अभी भी अुससे पूरी तरह मुक्त नहीं हुअी है। शराबबन्दी अुसके लिअे वरदानकी भांति लाभदायी सिद्ध हुअी है। बम्बअी सरकारका मैं बड़ा कृतज्ञ हूं कि वह अपनी शराबबंदीकी नीति पर दृढ़तापूर्वक कायम रही है, यद्यपि केन्द्रीय सरकार, शराबियों तथा अिस अुद्योगमें जिनका स्वार्थ है, अैसे व्यापारियों द्वारा अुस पर काफी जोर डाला गया है।

"लेकिन अब चुनाव आया है और अैसी संभावना है कि बंबअीकी सरकार शायद बिलकुल ही बदल जायगी। अिस संभावनाके विचारसे मैं कुछ चिंतित-सा हो गया हूं। सुनते हैं, श्री अशोक महेताने कहीं यह घोषणा की है कि अगर समाजवादी पक्षके हाथमें सत्ता आयी, तो वे शराबबंदीकी नीति छोड़ देंगे और लोगोंको अिस विषयमें संयमका पालन करनेकी सलाह देंगे। अिस तरह अुन्होंने अपनी राय साफ बता दी है। पर अैसी सरकारको मैं तो अपना मत नहीं दूंगा।

"लेकिन कांग्रेसका रवैया क्या होगा, यह पता नहीं। कौन कह सकता है कि बंबअीकी अगली कांग्रेस सरकार शराबबंदीकी वर्तमान नीतिको छोड़ नहीं देगी? कांग्रेसके घोषणापत्रमें शराबबंदीका वचन दुहराया नहीं गया है, और अिस विषयमें श्री नेहरूजीके विचार तो जाहिर ही हैं। बम्बअीके कांग्रेसियों या राज्यकी भिन्न-भिन्न प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियोंने भी अपनी नीति स्पष्ट करनेके लिअे कोअी स्वतंत्र और पूरक घोषणापत्र प्रकाशित नहीं किया है। वर्तमान बंबअी-मंत्रिमंडलके कुछ प्रमुख सदस्य नये चुनावोंमें खड़े नहीं हो रहे हैं। जो खड़े हो रहे हैं, अुनमें से श्री मोरारजी देसाअी तथा कुछ और लोग शराबबंदीका आग्रह रखते हैं, अैसा विश्वास किया जाता है; और संभव है अुनमें से कुछ चुने भी जायंगे। लेकिन शराबबंदीके सवाल पर यदि ये लोग अपने दलमें अल्पमतमें रह जायं, तो अैसी हालतमें वे क्या करेंगे? क्या वे अैसी सरकार बनानेसे अिनकार कर देंगे, जो शराबबंदीकी नीतिका परित्याग करना या अुसे नरम बनाना चाहेगी?

"दर्जीका धंधा करनेवाले हम जैसे लोगोंके लिअे शराबबंदी जीवन-मरणका सवाल है। और अिस संबंधमें अगर कांग्रेसकी नीति भी कमजोर होनेवाली हो, तो मैं जानना चाहता हूं कि मेरी जातिके लोगोंको, जो जातिकी रक्षा करना चाहते हैं, अपने मताधिकारका अुपयोग किस तरह करना चाहिये?"

पत्रलेखकने जो प्रश्न अुठाया है, वह बहुत प्रासंगिक है और अुसका सही स्पष्टीकरण तो वे ही लोग कर सकते हैं, जो अगले चुनावोंके लिअे खड़े हो रहे हैं। चूंकि यह आम खयाल है कि अगली

www.vinoba.in

सरकार कांग्रेस ही बनायेगी, अिसलिअे बंबअी राज्यके कांग्रेसी अुम्मीदवारोंको चाहिये कि वे सामूहिक या वैयक्तिक रूपसे वक्तव्य जाहिर करें और साफ-साफ बतायें कि अगली कांग्रेस सरकारमें शराबबंदीके प्रति अुनका क्या रुख होगा। मतदाता भी अपने-अपने चुनाव-क्षेत्रमें विभिन्न पार्टियोंके अुम्मीदवारोंसे यह सवाल कर सकते हैं और अुन्हें अपने मत देनेसे पहले यह प्रतिज्ञा लेनेके लिअे कह सकते हैं कि शराबबंदीके खिलाफ अुठाये गये किसी भी कदमका वे समर्थन नहीं करेंगे, बल्कि अुसकी सफलताके लिअे पूरी कोशिश करेंगे। अुनसे यह प्रतिज्ञा लेनेके लिअे भी कहा जा सकता है कि यदि धारासभामें शराबबंदी अुठानेके पक्षमें अुन्हें मत देनेके लिअे कहा गया, तो वे धारासभाकी कांग्रेस पार्टीसे अिस्तीफा दे देंगे।

वर्तमान बम्बअी सरकारके अुन पदाधिकारियों तथा दूसरे धारासभाअी सदस्योंको, जो चुनावमें खड़े होना चाहते हैं, जनताको यह आश्वासन देना चाहिये कि वे शराबबंदीकी नीतिमें किसी भी परिवर्तनका समर्थन नहीं करेंगे और अुस सरकारमें नहीं रहेंगे, जो अैसा परिवर्तन करनेका निर्णय करेगी।

वर्धा, १३-१०-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

५

तीसरा मुकाम

[ता० १७-४-'५१: वाटासिंगारम् : १२ मील]

आजका रास्ता कुछ पक्की सड़क, कुछ कच्ची, अैसा था। किनारेके और थोड़ी दूरके गांवोंके लोग स्वागतके लिअे सड़क पर आये थे। रेवनपल्ली, भीवनपल्ली, गोसकोंडा, कनकमूला, राअुलपल्ली, कपरावल्ली आदि अनेक छोटे-छोटे गांवोंके लोग आये थे। अिर्दगिर्दकी छोटी-छोटी पहाड़ियोंमें से भी लोग आये थे। अपने पास जो कुछ था — पत्रं, पुष्पं, फलंसे थालियां सजा कर लाये थे। जगह-जगह तोरण-पताकायें भी थीं। अेक जगह तो हमने स्त्री-पुरुषोंको और बच्चोंको दूरसे देखा जो पहाड़ीसे अुतरकर दौड़े-दौड़े सड़ककी ओर आ रहे थे। अुनको देखकर हमने विनोबाजीको रोक लिया। अुतने ही में लोग पहुंच गये। बांससे बंधी आमके पत्तोंकी घनी लंबी माला लिये दो युवक रास्तेके दोनों ओर खड़े हो गये और बातकी बातमें कमान भी खड़ी होग यी। विनोबाने फल-फूल स्वीकार किये, अुसी वक्त वे तकसीम भी कर दिये गये और आगे बढ़े। ८-३० बजे वाटासिंगारम् पहुंचे। लोग भजन-कीर्तन करते हुअे अगुवानी करने आये। गांवमें घर-घर तोरण बंधे थे। गांव बिल-कुल साफ-सुथरा था। गांवमें आनन्द-अुत्सवकी भावना दिखाअी दे रही थी। सड़कों पर जगह-जगह कमानें खड़ी थीं। निवास पर पहुंचने पर लोगोंसे कहा गया कि दो बजे सामुदायक कताअीके वक्त आयें, बादमें मिलनेका वक्त रखा गया है। भीड़ कुछ कम हुअी, पर गांवोंसे लोग तो आते ही रहे और दो बजे तक काफी भीड़ जम गयी।

पहले लोहा तो बन लें

विनोबाजी तो भोजनके लिअे कहीं बाहर जाते नहीं, अपने निवास पर ही दहीका मट्ठा लेते हैं। परन्तु हम लोगोंको भोजनके लिअे दूसरी जगह जाना था। रास्तेमें लोगोंने हमें ही आदरपूर्वक और आग्रहपूर्वक अपने घर बुलाया। वे लोग समझते थे कि संतके साथके लोगोंके आनेसे भी घर पावन होता है। हम लोग अुनकी भावनाको देखकर अपने मनको पावन कर रहे थे। मैं सोचता था — जिस पुण्य-पुरुषके पावन सहवाससे लोग हममें भी श्रद्धा रखने लगे हैं, अुसकी विश्वात्म भावनाका परस हमें भी हो तो हमारा सोना हो जाय। परन्तु अैसा सोना बननेके लिअे भी लोहेकी योग्यता तो प्राप्त करनी ही पड़ती है!

गांवका पहरा

दोपहरको कताअीके बाद मिलनेवालोंकी भीड़ लगने लगी। गांववालोंसे गांवकी जानकारी मिली। कुछ माह पूर्व कम्युनिस्ट आये थे। तब तो कुछ सामान खरीदकर ले गये थे। पर बीच-बीचमें आते रहते हैं और चीज-बस्त, रुपया आदि जो भी मिलता है, लूट खसोटकर ले जाते हैं। लोग डरे हुअे हैं। कुछ लोगोंकी अुनके साथ सहानुभूति भी नजर आअी। डरे हुअे लोग कुछ बढ़ा-चढ़ाकर बात करते नजर आये, तो सहानुभूति रखनेवाले कुछ छिपाते हुअे। दो सिक्ख भाअी भी मिले। यहां अुनकी डेअरी थी। पहले यहीं रहते थे, पर कम्युनिस्टोंकी हिरासत भुगत चुकनेके कारण व अपने पासका काफी सामान व पैसा अुनकी भेंट चढ़ा चुकनेके कारण अब दिनमें आते हैं और शाम होते ही हैदराबाद लौट जाते हैं।

रातमें गांववाले बारी-बारीसे पहरा देते हैं। बीस-बीसकी टोलियां रहती हैं। गांवके चारों ओर अैसी चार टोलियां काम करती हैं। गांववाले चाहते थे कि अब अुन्हें अिस कामसे मुक्ति मिले। "आपके गांवकी रक्षा दूसरा कौन करेगा?" विनोबाने अुनसे पूछा। गांव-वालोंका खयाल था कि पुलिस यह काम करती रहे। विनोबाने कहा: "फिर अुनके खर्चका बोझा भी आपको ही नित सहन करना पड़ेगा।"

लेकिन अिसके लिअे गांववाले तैयार नहीं थे, न वे यही चाहते थे कि पुलिस चली जाय।

पुलिसका यह हाल कि अेक घरमें अेक कम्युनिस्ट नेताको भोजन और बातचीतमें लगाकर पुलिसको बुलाया गया, तो जल्दबाजीमें कम्युनिस्टको गिरफ्तार करनेके बजाय घरवालेको ही गोलीका शिकार बना डाला। अुसकी बेवा और १३-१४ बरसका बच्चा विनोबाके पास शिकायत लेकर आये थे कि अब तक न कोअी तहकीकात हुअी है, न कोअी सहायता ही मिली है।

हैदराबादसे बीस मील पर यह चित्र था — कम्युनिस्टों और पुलिस दोनोंका। अभी भीतर — अिंटेरिअरमें जाना तो बाकी ही था। नलगुंडा जिला, जो दुनियामें कम्युनिस्टोंके कारण मशहूर हो गया है, अभी शुरू होना था। यह तो हैदराबादके अिर्दगिर्द और हैदराबाद जिलेकी ही हालत हम देख रहे थे। शामको प्रार्थनामें हमेशाकी तरह हजारोंकी तादादमें स्त्री-पुरुष अुपस्थित थे। अनुवाद अब श्री लक्ष्मीबहन कर रही थीं। लक्ष्मीबहन संगम और कोदंडराम रेड्डी, दोनों हैदराबादसे हमारे साथ हो गये थे — प्रांतिक कांग्रेसकी ओरसे। लक्ष्मीबहन बड़ी कलाकार हैं। शिक्षण विभागमें अूंची जगह पर थीं, परन्तु रजाकारोंके जमानेमें निषेध प्रकट करनेके लिअे नौकरीसें अिस्तीफा दे दिया था। तबसे लोगोंकी सेवामें जुटी हुअी हैं। कोदंड रेड्डी नवयुवक हैं, सेवाभावी, सुयोग्य और नम्र।

विनोबाने प्रार्थना-प्रवचनमें लोगोंको समझाया:

"आप लोगोंको वही कहना चाहिये, जो आपने देखा हो। सच और झूठमें चार अंगुलका अन्तर है। दो आने बातको पौने दो आने कहकर बताओ, पर सवा दो आने नहीं। अगर आप लोग सही-सही हालत बतायेंगे, तब तो हम आपकी हालत समझ सकेंगे। हम आये ही अिसलिअे हैं कि आपके दुःखोंको देखें-सुनें-समझें। सही हालतका पता चलेगा तभी तो हम अिलाज बता सकेंगे।"

डरनेवालोंका भगवान् भी साथी नहीं

फिर विनोबाजीने अुन लोगोंको अेक-दो हिदायतें भी दीं। "हरगिज डरो नहीं। कोअी बात पूछी जाय, तो वह सच-सच बताओ। जो डरता है, अुसकी रक्षा भगवान् भी नहीं कर सकता। आपको न तो कम्युनिस्टोंसे डरना चाहिये, न पुलिसवालोंसे। अपने गांवकी रक्षा करना गांववालोंका ही काम है। अगर आप लोगोंमें अेकता होगी तो आपके गांवका बचाव आप कर लेंगे। जानवर भी, जो दुर्बल होते हैं, अपना अेक संघ बनाकर अपनी रक्षा कर लेते हैं। आप अेक

www.vinoba.in

होकर रहनेके बजाय अगर अलग-अलग रहेंगे और अेक दूसरेके साथ लड़ते रहेंगे, तो आपको कौन बचा सकता है?

"आपने देखा होगा कि डरनेवालेको जानवर भी पहचान लेता है। हमारे सामने कअी जानवर आते हैं। वे हमारी आंखकी ओर देखकर ही ज़ान लेते हैं कि हम डर गये हैं या नहीं। अगर हमें वे भयभीत पाते हैं तो हमला करते हैं, निर्भय पाते हैं तो बाजूसे चले जाते हैं। अिसी तरह अगर यहां पुलिस-मिलिटरी आवे, तो निर्भयतासे आप अपनी बात बताअिये। लोग मुझे पूछते हैं कि 'हम पर कम्युनिस्ट भी जुल्म करते हैं, पुलिसवाले भी करते हैं, तो हमारी रक्षा कौन करेगा?' मुझे यह सुनकर आश्चर्य होता है। मिलिटरी और पुलिसवालोंका भय तो बिलकुल नहीं होना चाहिये, क्योंकि वे तो रक्षाके लिअे ही यहां भेजे गये हैं। और कम्युनिस्टोंसे अिसलिअे डरनेका कारण नहीं है कि वे तो दो-चार ही आवेंगे और आप तो हजारों हैं। अगर अुनसे भी डरेंगे तो फिर आपसे क्या कहा जाय? आपको अपने गांवमें स्वयंसेवक दल बनाना चाहिये। स्वयंसेवक दलका काम होगा कि गांवकी रक्षा करे। दलको अुस तरहकी तालीम दी जानी चाहिये। अगर हम डर छोड़ देंगे तो कम्युनिस्ट भी नहीं डरायेंगे। आखिर वे भी कोअी राक्षस तो हैं नहीं। वे तुम्हारी-हमारी तरह मनुष्य ही हैं। अेक बार अुन्हें पता चल जायगा कि लोग निर्भय हैं, तो फिर वे कुछ नहीं करेंगे।"

बादमें गांवकी आर्थिक स्थितिके बारेमें ध्यान दिलाते हुअे कहा: "आपके गांवमें कुछ लोग गरीब हैं और कुछ श्रीमान् हैं और कुछ मध्यम श्रेणीके हैं। जो श्रीमान् और मध्यम श्रेणीके हैं, अुनका काम है कि गरीबोंके साथ हिलमिल जायं। अगर कुछ लोगोंके पास धन आ गया है, तो भगवान्ने अुन्हें वह गरीब लोगोंकी सेवाके लिअे ही दिया है। भगवान् तो कसौटी करता है, अुसकी भी, जिसे वह धन देता है, और अुसकी भी, जिसे वह गरीब बनाता है। जिसको धन देता है, अुसकी परीक्षा लेता है कि वह दयाभाव रखता है या नहीं। अगर रखता है तो वह भगवान्की कसौटीमें पास होता है। अुसी तरह जो गरीब है, अुसकी परीक्षा यही कि वह हिम्मत रखता है या नहीं? अगर वह हिम्मत रखता है, हारता नहीं, डरता नहीं, दीन नहीं बनता, तो भगवान्की परीक्षामें वह पास है। और अगर वह दीन बनता है, डरता है, तो भगवान्की परीक्षामें वह पास नहीं।

"अिस तरह अिस गांवमें गरीब और श्रीमान् दोनों अेक-दूसरेकी मदद करेंगे, तो न यहां कम्युनिस्ट कुछ तकलीफ दे सकेंगे और न पुलिस ही। यहां स्वराज्य होगा।"

श्रीमानोंके लिअे खतरा

और अंतमें अपनी भावना प्रकट करते हुअे आगाह किया: "तो मैं भगवान्से प्रार्थना करूंगा कि आपके गांववालोंको वह अैसी सद्बुद्धि दे कि सब लोग अेक-दूसरेको प्यार करें, अेक-दूसरेकी मदद करें। अगर श्रीमान् गरीबोंके लिअे अपना धन, अपनी बुद्धि, अपनी ताकत खर्च करेंगे, तो वे जी सकेंगे; नहीं तो श्रीमानोंके लिअे खतरा है। अगर वे अपने गांववालोंसे प्रेमका बर्ताव करेंगे, तो हिन्दुस्तानमें अुनके लिअे कोअी खतरा नहीं है।"

दा० मूं०

हमारा नया प्रकाशन

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

टिप्पणियां

भारतीय नामकरण

अखबारोंमें खबर आअी है कि बी० बी० अेण्ड सी० आअी० और जी० आअी० पी० रेलवेके मौजूदा नाम बदलकर 'वेस्टर्न अेन्ड सेन्ट्रल झोन रेलवे' या कुछ अिसी तरहका नया नाम रखा जायगा। अगर मौजूदा नाम बदलने ही हैं, तो यह वांछनीय है कि अुन्हें भारतीय नाम दिया जाय — भले रेलवेका व्यवस्था-तंत्र कुछ समयके लिअे अपने सारे कामकाजमें अंग्रेजीका ही व्यवहार क्यों न करे। यह मानते हुअे भी कि अंग्रेजी शब्द 'रेलवे' अपने मूल रूपमें हिन्दीमें ले लिया गया है और सरल शब्द 'रेल' में नहीं बदला गया है, फिर भी 'वेस्टर्न अेण्ड सेन्ट्रल झोन' शब्द, जो किसी भी तरह पारिभाषिक नहीं कहे जा सकते, भारतीय स्रोतके होने चाहियें; यानी मध्य-पश्चिमी रेलवे (या रेल)। जनताकी भाषामें शायद अिसका रूप होगा: मध-पच्छिम रेल।

वर्धा, २३-१०-'५१

(अंग्रेजीसे)

अुपसंख्याओंका निर्देश

अंग्रेजीमें अुपसंख्याओंका निर्देश नीचे लिखे प्रकारोंसे किया जाता है: (1), (2), (3), (4). . . ; (i), (ii), (iii), (iv). . . ; (a), (b), (c), (d). . . . वगैरा।

देशी भाषाओंमें (१), (२), (३), (४) का सर्वमान्य और आसान प्रकार है ही। लेकिन, दूसरे प्रकारोंके विषयमें कोअी अेक पद्धति कायम नहीं हुअी है, और विविध लेखक भिन्न-भिन्न तरहसे अैसा निर्देश करते हैं। अुदाहरणके लिअे (अ), (आ), (अि). . . या (क), (ख), (ग), (घ). . . । कअी लेखक (अ), (अि), (अु), (ऋ), (क), (ख). . . अिस क्रमका भी अुपयोग करते हैं। कअी (क), (च), (ट), (त), (प). . . . का। और कअी (अ), (ब), (क), (ड). . . का। अिसके कारण अेक अक्षरसे भदकी कौनसी संख्याका निर्देश होगा, यह ख्यालमें नहीं आता।

मेरा सुझाव है कि नीचे लिखे प्रकारोंमें से आवश्यकतानुसार या अिच्छानुसार पसंदगी की जाय:

१. (१), (२), (३), (४). . . .

२. (-), (=), (≡), (।), (।-), (।=), (।≡), (।।). . . , (।।।≡) — १५ संख्या तक।

३. (क), (ख), (ग), (घ), (ङ), (च). . . . (म), (य), (र). . . . (ह), (क्ष) (ज्ञ) — ३५ संख्या तक।

४. (अ), (आ), (अि), (अी), (अु), (अू), (अे), (अै), (ओ), (औ) तक — १० संख्या।

पहले प्रकारका अुपयोग चाहे जितनी संख्या तक किया जा सकता है। दूसरे, तीसरे, और चौथे प्रकारका अुपयोग ८-१० भद हों तब तक ही करना ठीक होगा। अधिक भद हों तो (१), (२) आदिका ही अुपयोग करना अच्छा है।

वर्धा, १९-१०-'५१ कि० घ० म०

विषय-सूची

		पृष्ठ
विनोबाकी यात्राको सफल बनाओ	जे० बी० कृपलानी	३१३
चिरगांवमें विनोबाका स्वागत		३१३
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा — ३	दा० मूं०	३१४
किसे चुनें?	राल्फ रिचार्ड कैथान	३१६
साम्यवाद और सर्वोदय	शंकरराव देव	३१७
असभ्यता	कि० घ० मशरूवाला	३१८
बम्बअीमें शराबबंदीका भविष्य	कि० घ० मशरूवाला	३१८
विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा : ५	दा० मूं०	३१९
टिप्पणियां:		
भारतीय नामकरण	कि० घ० म०	३२०
अुपसंख्याओंका निर्देश	कि० घ० म०	३२०

www.vinoba.in